'रश्मिरथी' का कर्ण–एक समीक्षा

प्रो. डॉ. सुरवीरसिंह आई. ठाकोर
संस्कृत विभागाध्यक्ष,
आर्ट्स एंड कॉमर्स कालेज, ओलपाड, सुरत

'रश्मिरथी' राष्ट्र कवि दिनकर जी की श्रेष्ठ काव्य रचना है । कवि ने इस काव्य में कर्ण के समूचा चरित्र को नये स्वरूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है । हम जानते हैं कि महाभारत के पात्रों में कर्ण का पात्र उदात्त उच्च) देखने को मिलता है । वह हंमेशा सदा) मानवता, त्यागमय की दृष्टि से प्रबुद्ध संवेदनशील कविओं को आकर्षित करता है । 'दिनकर' जी ने 'रस्मिरथी' के अंतर्गत कर्ण के पात्र को एक नया स्वरूप दिया है । शौर्य प्रदर्शन के समय पिता का नाम पूछे जाने पर कर्ण की व्यथा इस शब्दों में अभिव्यक्त हुई है।

"मैं उनका आदर्श कहीं जो व्यथा न खोल सकेंगे पूछेगा जग किन्तु पिता का नाम न बोल सकेंगे जिनका निखिल विश्व में कोई कहीं न अपना होगा मन लिए उमंग जिन्हें चिर काल कल्पना होगा।"

कर्ण चरित्र के उदार की चिन्ता इस बत का प्रमाण है कि – हमारे समाज में मानवीय गुणों की पहचान बढ़नेवाली है । कुल और जाति का अभिमान बिदाई हो राह है । आगे मनुष्य इस पद का अधिकारी होगा, जो इसके पद का सामर्थ्य से सूचित होता है । यह पद का नहीं, जो उसकी माता के वंश की देन है ।

कर्ण के जीवन चरित्र का उत्कर्ष नयी मानवता के स्थापना का ही प्रयत्न है । कर्ण का भाग्य, सचमुच कई युगों के बाद जाग्रत हुआ है ।

जन्म, शिक्षा, शाप

दिनकर जी ने कर्ण के भाववादी दृष्टिकोण को अनेक जगह पर वस्तुवादी धरातल के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया है । इसी कारण कर्ण की आंतरिक पीड़ा बढ़ती है और वर्ग तथा जाति विषमता से ग्रस्त समाज का मुख खूला हुआ दिखाई देता है। कर्ण समाज के इस कुत्रिम विभाजन पर

अत्यंत चिंतित है, पीडित है । जैसे कि – तत्काल युवा की मनुष्यता, जाति और वर्ण–वैषम्य को अपनी आर्थिक मुक्ति के मार्ग में प्रमुख अवरोध के रूप में दिख रही थी ।

सूर्यपुत्र होने पर भी कर्ण जैसे वीर यौद्धा ने बाल्यावस्था से ही सहन करना पड़ा, यह समाज की कैसी व्यथा है !

जाति भेद पर महाभारत का मौन कर्ण क्रोधित होकर कहता है कि –

"जाति – जाति रहते,
जिनकी पूंजी केवल पाखंड ।
मैं क्या जान् जाति
जाति है ये मेरे भुजदंड ॥"
रश्मिरथी, सर्ग–१, पंक्ति–१५)

सूर्य का पुत्र कर्ण कुंती के कोख से जन्मा फिर भी सूतपुत्र के रूप में उसका पालन होता है।कुंती ने जन्म तो दिया किन्तु वह तो अपरिणीत थी । इसलिए समाज के सामने इस पुत्र को स्वीकार नहीं कर पाती।

कर्ण ने सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष किया, चिन्तित हुए और अपने जीवन के निर्णायक अवसर पर से आदर्श चरित्र का परिचय भी दिया।कुंती के मातृत्व के छाँह से दूर रहकर निम्न जाति से परिचित होकर भी उन्होंने दुर्योधन और अर्जुन की तरह राजश्री होने का प्रतिपादित किया। कर्ण ने न तो विलासी जीवन के भोग को अपना न तो निम्न चित्तवृत्ति को ।

कवि दिनकर जी कर्ण की करुण गाथा की दशा का वर्णन किया है । कर्ण अपनी माता को नागण जैसी समझता दिखाता) है, जो बालक को अपने कोख गोद) में सेते हैं, अपने अंतर का लहू पिला के जन्म देने के बाद फेंक देते हैं ।

'महाभारत' हो या 'रश्मिरथी' कर्ण का अखंड व्यक्तित्व समग्र महायुद्ध से ऊपर उच्च) है। महाभारत या कर्णभारम् या रश्मिरथी का कर्ण समग्र महायुद्ध की अपेक्षा से अर्जुन के साथ युद्ध करने में ओर तत्पर दिखता है । कुरुक्षेत्र में भी वह चारों पांडवों को छोड़कर वह अर्जुन का ही ढूँढता फिरता है । समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से कर्ण की मनः स्थिति पर विचार करे तो यह तथ्य स्पष्ट रूप से प्रतित होता है कि, कर्ण का अर्जुन के साथ जन्मजात विरोध सिर्फ माता के अधिकार को लेकर ही है । अर्जुन की तरह वह भी कुंती का ही संतान था । कुंती इसके जन्म के समय अविवाहित थी सिर्फ इसलिए ही कर्ण अपने सामाजिक, राजनैतिक अधिकारों से वंचित हो गया । यह मान्यता इसके अचेतन मन में अव्यक्त रूप में रही होगी । कुंती के अन्य पुत्रों राजनैतिक, सामाजिक अधिकारों का उपभोग करें तथा कर्ण लांछित जीवन व्यतीत करे ऐसी बात इसके दिल

में खटकती थी । उसका मुख्य प्रतिद्वन्द्वी अर्जुन था, क्योंकि वीर होने के नाते कुंती पर सब से ज्यादा अधिकार वही रखता था । कर्ण की मुख्य लड़ाई अपने सामाजिक, राजनैतिक अधिकारों के लिए थी, किन्तु इसके दिल में अपनी माता कुंती के लिए वास्तविक प्रेम की चाह थी । वह भी मानना पड़ेगा ।

माता कुंती जब अपना प्रेम-स्नेह लेकर उसके पास आती थी, तो उस समय का उसका मातृ-स्नेह न था, किन्तु एक राजनीति थी । कर्ण के जीवन में इस से बड़ी विडंबना कौन-सी हो सकती है, जो क्षण उसकी माता सामाजिक रिवाज के अनुसार उसको अपने पुत्र को स्वीकार ने के लिए तैयार थी, तब तक तो कर्ण दुर्योधन की शिबिर में इतना मिल गया था कि उसे वापसी करनी न तो मात्र नैतिक दृष्टि से किन्तु राजनैतिक दृष्टि से भी असाध्य था । इसके जीवन की विडंबना की शूरवीरता यह थी कि उसकी माता अपने मातृ-स्नेह के साथ एक राजनैतिक चाल लपेट कर आयी थी।

कर्ण ने महायुद्ध में अपना पक्ष स्पष्ट कर लिया था कि दुर्योधन का पक्ष लेना यह अर्जुन के साथ युद्ध का निमित्त मात्र है ।

"केवल निमित्त संगर का दुर्योधन है,
सच पूछो तो यह कर्ण पार्थ का रण है ।
छीनो सुयोग मत मुझे अंक में लेकर
यज्ञ, मुकुट, मान, कूल, जाति प्रतिष्ठा देकर ।"

कवि दिनकर जी ने कर्ण की व्यथा को समझकर मानवता के गुणों की प्रशंसा की है, जो जन्म से नहीं कर्म से पहचानी जाती है । गाँधीजी के अंतिम मानवी की उदारता और दूसरी तरफ मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव तत्कालीन समाज में फैली थी । ऐसे प्रसंग के समय जाति से मनुष्य की पहचान मिथ्या सिद्ध होती थी, जो दुर्योधन ने कहा है कि -

"बड़े वंश से क्या होता है, खोटे हो यदी काम ?
नर का गुण उज्जवल चरित्र है, नहीं वंश धन-धाम ।"

जाति के कारण ही बार बार तिरस्कृत और अपमानित कर्ण की वाणी में अगन ज्वाला प्रगट होती है ।

कर्ण सही अर्थ में परम धनी है, यह दुर्भाग्य की बात है कि कर्ण की दानवीरता का अनुचित लाभ उठा के इन्द्र ने उसके कवच-कुंडल छीन लिए ।

कवि दिनकर जी का दृष्टिकोण प्रगतिशील प्रतीत होता है । वे मानवी की शक्ति और सामर्थ्य को ही सर्वोपरी मानते हैं, मानव नियति की क्रूरता, कटूता के प्रतिशोध के साथ जीवन के अंत तक संघर्ष/संग्राम करने के लिए कृत–संकल्प है ।

कर्ण के शब्दो में –

"चले संघर्ष आठो पाम तुम से,
करुँगा अन्त तक संग्राम तुम से ।"

इस प्रकार 'रश्मिरथी' का कर्ण एक वीर योद्धा के रूप में प्रस्तुत होता है, परंतु राजनीति के गंदे रज से रंजित होते हुए भी मूल्यवान योद्धा के रूप में देखने को मिलता हैा। जो वचन पालन के प्रति अत्यंत प्रतिबद्ध है ।

'रश्मिरथी' में कर्ण को कुचले हुए वर्ग के जागृति के लिए सूर्य के रूप में परिकल्पित किया है । जिन्हें जन्म से लेकर अपने अंतिम साँस तक उच्चवर्णी ताकतों शूरवीरों) की सामूहिक प्रपंच नीति का शिकार होना पड़ा है ।

दिनकर जी ने कर्ण के पात्र द्वारा सांप्रत ज्ञातिवाद समक्ष उठती प्रतिक्रियावादी शक्तियों के साथ संघर्ष की यथार्थ समस्या की ओर संकेत किया है ।